International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
Volume 4, Issue 2
Mar-Apr 2026, PP 1-9

बच्चों के व्यक्तित्व विकास और नैतिक मूल्यों के निर्माण में परिवार की भूमिका : एक तुलनात्मक अध्ययन

सरला देवी
असिस्टेंट प्रोफेसर
विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र
गिन्दो देवी महिला महाविद्यालय, बदायूँ
Email- prof.sarla1980@ gmail.com

शोध सार

परिवार समाज की सबसे प्राचीन और महत्वपूर्ण संस्थाओं में एक है, जो बच्चों के व्यक्तित्व विकास तथा नैतिक मूल्यों के निर्माण में अपनी केंद्रीय भूमिका निभाती है। आधुनिक युग में वैश्वीकरण, शहरीकरण और तकनीकी परिवर्तन के कारण पारिवारिक संरचनाओं में व्यापक बदलाव हुए हैं, जिनका प्रभाव बच्चों के सामाजिक और मनोवैज्ञानिक विकास पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य संयुक्त परिवार, एकल परिवार, एकल अभिभावक परिवार तथा आधुनिक वैकल्पिक पारिवारिक संरचनाओं के तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से यह विश्लेषण करना है कि किस प्रकार पारिवारिक वातावरण बच्चों के व्यक्तित्व और नैतिक चेतना को प्रभावित करता है। यह अध्ययन समाजीकरण सिद्धांत, सामाजिक अधिगम सिद्धांत तथा अटैचमेंट थ्योरी पर आधारित है। शोध के निष्कर्ष बताते हैं कि पारिवारिक संरचना चाहे कोई भी हो, यदि उसमें भावनात्मक सुरक्षा, संवाद और मूल्य-आधारित पालन-पोषण मौजूद हो, तो बच्चों का समग्र विकास संभव है।

मुख्य शब्द (Keywords): पारिवारिक संरचना, व्यक्तित्व विकास, नैतिक मूल्य, समाजीकरण, संयुक्त परिवार, एकल परिवार।

1. प्रस्तावना (Introduction)

मानव समाज की सबसे मूलभूत और प्राचीन संस्था परिवार है। यह केवल जैविक आवश्यकताओं की पूर्ति का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों के संचार का प्रमुख केंद्र भी है। बच्चों का व्यक्तित्व विकास और उनके नैतिक चरित्र का निर्माण मुख्यतः पारिवारिक वातावरण में ही प्रारम्भ होता है। वर्तमान समय में वैश्वीकरण, शहरीकरण, तकनीकी प्रगति तथा बदलती जीवनशैली के कारण पारिवारिक संरचनाओं में व्यापक परिवर्तन दिखाई दे रहे हैं। संयुक्त परिवारों का स्थान धीरे-धीरे एकल परिवार ले रहे हैं, वहीं एकल अभिभावक परिवार, महिला मुखिया परिवार, **DINK (Double Income No Kids)** और सरोगेसी आधारित परिवार जैसी नई संरचनाएँ भी उभर रही हैं। ऐसे परिवर्तनों के बीच यह प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है कि विभिन्न प्रकार की पारिवारिक संरचनाएँ बच्चों के व्यक्तित्व विकास और नैतिक मूल्यों को किस प्रकार प्रभावित करती हैं। इस शोध-पत्र का उद्देश्य पारिवारिक संरचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए यह समझना है कि कौन-से सामाजिक, सांस्कृतिक और

मनोवैज्ञानिक कारक बच्चों के विकास में निर्णायक भूमिका निभाते हैं। मानव समाज के विकास में परिवार का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। यह केवल जैविक संबंधों का समूह नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों का केंद्र भी है। बच्चे का पहला सामाजिक अनुभव परिवार में ही प्रारंभ होता है, जहाँ वह भाषा, व्यवहार, अनुशासन और नैतिकता सीखता है।
आधुनिक समय में पारिवारिक संरचना में आए बदलावों ने समाजशास्त्रियों और शिक्षाविदों के सामने नए प्रश्न खड़े किए हैं–क्या संयुक्त परिवार बच्चों में नैतिक मूल्यों को अधिक प्रभावी ढंग से विकसित करते हैं? क्या एकल परिवार बच्चों को अधिक स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बनाते हैं? और क्या आधुनिक वैकल्पिक परिवारों में पारंपरिक मूल्य कमजोर हो रहे हैं? इन्हीं प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए यह शोध-पत्र विभिन्न पारिवारिक संरचनाओं का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

2. **साहित्य समीक्षा** (Review of Literature)

समाजशास्त्रीय और मनोवैज्ञानिक अध्ययनों में परिवार को बच्चों के समाजीकरण का प्रमुख माध्यम माना गया है।

- पार्सन्स (1955) ने परिवार को सामाजिक स्थिरता का आधार बताते हुए कहा कि यह भावनात्मक समर्थन और सामाजिक भूमिकाओं का प्रशिक्षण प्रदान करता है।
- **Albert Bandura** (1977) के सामाजिक अधिगम सिद्धांत के अनुसार बच्चे अनुकरण के माध्यम से व्यवहार सीखते हैं, इसलिए परिवार के सदस्यों का आचरण बच्चों के नैतिक विकास को अधिक प्रभावित करता है।
- बॉल्बी (1969) की अटैचमेंट थ्योरी बताती है कि माता-पिता के साथ मजबूत भावनात्मक संबंध बच्चों में आत्मविश्वास और सामाजिक अनुकूलन को बढ़ावा देते हैं।
- भारतीय संदर्भ में आई.पी. देसाई (1964) ने संयुक्त परिवारों को सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण का माध्यम बताया है।
- **Urie Bronfenbrenner** (1979) के अनुसार परिवार बच्चे के विकास का प्रमुख माइक्रोसिस्टम है।
- **Jean Piaget** (1965) ने नैतिक विकास को संज्ञानात्मक विकास से जोड़ा।
- इन अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि परिवार बच्चों के व्यक्तित्व एवं नैतिक मूल्यों के विकास में अपनी केंद्रीय भूमिका निभाता है। हालांकि आधुनिक शोध यह भी दर्शाते हैं कि एकल परिवारों में बच्चों की व्यक्तिगत स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता अधिक विकसित होती है।

3. **अध्ययन का उद्देश्य और प्रश्न** (Research Objectives & Questions)

इस शोध का मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित बिंदुओं पर केन्द्रित है–

- बच्चों के व्यक्तित्व विकास में परिवार की भूमिका का विश्लेषण करना।
- नैतिक मूल्यों के निर्माण में पारिवारिक वातावरण की भूमिका का विश्लेषण करना।
- संयुक्त, एकल, एकल अभिभावक तथा आधुनिक पारिवारिक संरचनाओं की तुलनात्मक समीक्षा करना

- बदलती पारिवारिक संरचनाओं के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों का मूल्यांकन करना।

4. शोध प्रश्न

- क्या संयुक्त परिवार बच्चों में सामूहिकता और नैतिकता को अधिक मजबूत करते हैं?
- क्या एकल परिवार आत्मनिर्भरता और व्यक्तिगत सोच को बढ़ावा देते हैं?
- आधुनिक पारिवारिक संरचनाएँ बच्चों के मूल्य-निर्माण को किस प्रकार प्रभावित करती हैं?

5. शोध पद्धति (Research Methodology)

यह शोध गुणात्मक (**Qualitative**) और तुलनात्मक (**Comparative**) दृष्टिकोण पर आधारित है। गुणात्मक शोध वह पद्धति है जिसमें सामाजिक घटनाओं, मानवीय व्यवहार, अनुभवों, भावनाओं एवं मूल्यों का गहराई से अध्ययन (**In-depth understanding**) किया जाता है। यह संख्यात्मक (**Numerical**) आंकड़ों के बजाय शब्दों, विचारों, अनुभवों एवं दृष्टिकोणों पर आधारित होता है। वही तुलनात्मक शोध वह पद्धति है जिसमें दो या दो से अधिक समूहों, परिस्थितियों या संरचनाओं की तुलना करके उनके बीच समानताओं एवं भिन्नताओं का विश्लेषण किया जाता है। इसका उद्देश्य यह जानना होता है कि किस कारक का प्रभाव अधिक या कम है और क्यों। इस प्रकार गुणात्मक शोध हमें गहराई से समझ प्रदान करता है और तुलनात्मक शोध विभिन्न परिस्थितियों के बीच अंतर एवं प्रभाव को स्पष्ट करता है। जब दोनों का संयोजन किया जाता है, तो शोध अधिक समग्र (**Comprehensive**), विश्वसनीय (**Reliable**) एवं सार्थक (**Meaningful**) बन जाता है। यही कारण है कि बच्चों के व्यक्तित्व विकास और नैतिक मूल्यों के निर्माण में परिवार की भूमिका : एक तुलनात्मक अध्ययन शोध में गुणात्मक (**Qualitative**) और तुलनात्मक (**Comparative**) दोनों दृष्टिकोणों को अपनाया गया है।

6. डेटा स्रोत:

द्वितीयक स्रोत (पुस्तकें, शोध-पत्र, रिपोर्ट)।
समाजशास्त्रीय सिद्धांतों का विश्लेषण।

विश्लेषण विधि:
इस अध्ययन का विश्लेषण तीन प्रमुख सिद्धांतों पर आधारित है–

- समाजीकरण सिद्धांत: परिवार बच्चों को सामाजिक नियम और मूल्य सिखाता है।
- सामाजिक अधिगम सिद्धांत: बच्चे अनुकरण के माध्यम से व्यवहार सीखते हैं।
- अटैचमेंट थ्योरी: भावनात्मक जुड़ाव व्यक्तित्व निर्माण का आधार है।

इन सिद्धांतों के माध्यम से यह समझा जाता है कि पारिवारिक संरचना बच्चों के व्यवहार, सोच और नैतिक निर्णय को किस प्रकार प्रभावित करती है।

International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
Volume 4, Issue 2
Mar-Apr 2026, PP 1-9

7. **तुलनात्मक विश्लेषण**

विषयवस्तु विश्लेषण (**Content Analysis)**

सैद्धांतिक आधार (Theoretical Framework)-
समाजीकरण सिद्धांत– समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से बच्चा समाज के नियम, मूल्य और व्यवहार सीखता है। टैल्कॉट पार्सन्स (**Talcott Parsons)** ने परिवार को समाजीकरण का प्रमुख माध्यम माना है। उनके अनुसार परिवार बच्चों में भावनात्मक स्थिरता और सामाजिक भूमिका की समझ विकसित करता है।
सामाजिक अधिगम सिद्धांत (**Social Learning Theory)-** अल्बर्ट बंडूरा (**Albert Bandura)** के सामाजिक अधिगम सिद्धांत के अनुसार बच्चे अनुकरण और अवलोकन द्वारा व्यवहार सीखते हैं। परिवार में माता–पिता और बुजुर्गों का व्यवहार बच्चों के लिए आदर्श बनता है, जिससे नैतिक मूल्यों का निर्माण होता है।
अटैचमेंट थ्योरी (Attachment Theory)- जॉन बॉल्बी (**John Bowlby)** ने बताया कि प्रारम्भिक भावनात्मक जुड़ाव बच्चे के आत्मविश्वास और सामाजिक कौशल को प्रभावित करता है। मजबूत पारिवारिक संबंध बच्चों में सुरक्षा की भावना और सकारात्मक व्यक्तित्व को जन्म देते हैं।

पारिवारिक संरचना की अवधारणा– पारिवारिक संरचना से आशय परिवार के सदस्यों की संख्या, उनकी भूमिकाओं, संबंधों और सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था से है। भारतीय समाज में मुख्यतः निम्नलिखित पारिवारिक संरचनाएँ देखने को मिलती हैं–

- संयुक्त परिवार– संयुक्त परिवार बच्चों को सामाजिक रूप से परिपक्व और नैतिक रूप से मजबूत बनाते हैं, लेकिन कभी–कभी व्यक्तिगत स्वतंत्रता सीमित हो सकती है।
- एकल (न्यूक्लियर) परिवार– एकल परिवार बच्चों को आधुनिक और आत्मनिर्भर बनाते हैं, लेकिन सामाजिक अनुभव और सामूहिकता सीमित हो सकती है।
- एकल अभिभावक परिवार (**Single-Parent Family)-** यह संरचना बच्चों को मजबूत और आत्मनिर्भर बनाती है, लेकिन भावनात्मक संतुलन बनाए रखना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।
- महिला मुखिया परिवार– महिला मुखिया परिवार बच्चों में आत्मनिर्भरता और लैंगिक समानता की भावना विकसित करते हैं, लेकिन आर्थिक और सामाजिक चुनौतियाँ प्रभाव डाल सकती हैं।
- आधुनिक वैकल्पिक संरचनाएँ– (**DINK,** सरोगेसी आधारित परिवार आदि)
- इन सभी संरचनाओं का बच्चों के व्यक्तित्व विकास पर अलग–अलग प्रभाव पड़ता है।
- बच्चों का व्यक्तित्व विकास : अवधारणा– व्यक्तित्व विकास में बच्चे के भावनात्मक, सामाजिक, बौद्धिक और नैतिक पक्ष शामिल होते हैं। एरिक एरिक्सन (**Erik Erikson)** के मनोसामाजिक विकास सिद्धांत के अनुसार बचपन के विभिन्न चरणों में परिवार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।

व्यक्तित्व विकास के प्रमुख आयाम (**Key Dimensions of Personality Development)-**
व्यक्तित्व विकास एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति के आंतरिक गुण (सोच,

International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
Volume 4, Issue 2
Mar-Apr 2026, PP 1-9

भावनाएँ) और बाहरी व्यवहार (संबंध, निर्णय) दोनों शामिल होते हैं। इसके प्रमुख आयाम निम्नलिखित हैं—

आत्मविश्वास (**Self-Confidence)-** आत्मविश्वास व्यक्ति की अपनी क्षमताओं और निर्णयों पर विश्वास करने की भावना है। चुनौतियों का सामना करने की क्षमता बढ़ती है। सकारात्मक सोच विकसित होती है। लक्ष्य प्राप्ति में सहायता मिलती है। महत्त्व: आत्मविश्वासी व्यक्ति जीवन में सफलता और नेतृत्व क्षमता प्रदर्शित करता है।

सामाजिक कौशल (**Social Skills)-** सामाजिक कौशल से आशय दूसरों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद और व्यवहार करने की क्षमता से है। सहयोग और टीमवर्क, संचार कौशल (**Communication Skills),** सहानुभूति और सम्मान। महत्त्व: यह आयाम व्यक्ति को समाज में समायोजित होने और अच्छे संबंध बनाने में मदद करता है।

निर्णय क्षमता (**Decision-Making Ability)-** निर्णय क्षमता व्यक्ति की सही और तर्कसंगत निर्णय लेने की योग्यता को दर्शाती है। समस्या समाधान (**Problem Solving),** तर्कशक्ति (**Logical Thinking),** विकल्पों का मूल्यांकन। महत्त्व: यह व्यक्ति को जीवन की जटिल परिस्थितियों में उचित निर्णय लेने में सक्षम बनाता है।

भावनात्मक संतुलन (**Emotional Stability)-** भावनात्मक संतुलन से आशय अपनी भावनाओं को नियंत्रित और संतुलित रखने की क्षमता से है। तनाव प्रबंधन (**Stress Management),** आत्म-नियंत्रण (**Self-Control),** सहानुभूति (**Empathy)**। महत्त्व: भावनात्मक रूप से संतुलित व्यक्ति मानसिक रूप से स्वस्थ और स्थिर रहता है।

नैतिक सोच (**Moral Thinking)-** नैतिक सोच व्यक्ति की सही और गलत के बीच अंतर करने तथा नैतिक निर्णय लेने की क्षमता है। सत्य और ईमानदारी, जिम्मेदारी और कर्तव्य, सामाजिक न्याय की समझ। महत्त्व: यह व्यक्ति को एक जिम्मेदार और नैतिक नागरिक बनने में सहायता करता है।

इस प्रकार व्यक्तित्व विकास के ये सभी आयाम—आत्मविश्वास, सामाजिक कौशल, निर्णय क्षमता, भावनात्मक संतुलन और नैतिक सोच—एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं और मिलकर व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। अतः कहा जा सकता है: "व्यक्तित्व विकास एक संतुलित प्रक्रिया है, जिसमें मानसिक, सामाजिक और नैतिक सभी आयामों का समन्वय आवश्यक है।" परिवार इन सभी आयामों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।

नैतिक मूल्यों का निर्माण और परिवार

नैतिक मूल्य वे सिद्धांत हैं जो सही-गलत का बोध कराते हैं। सत्य, ईमानदारी, सहानुभूति, अनुशासन और जिम्मेदारी जैसे मूल्य मुख्यतः पारिवारिक वातावरण में ही विकसित होते हैं। भारतीय परंपरा में "मातृ देवो भवः, पितृ देवो भवः" जैसी अवधारणाएँ परिवार को नैतिक शिक्षा का केंद्र मानती हैं। परिवार में बुजुर्गों की उपस्थिति, धार्मिक अनुष्ठान और सांस्कृतिक परंपराएँ बच्चों को नैतिक दिशा प्रदान करती हैं।

संयुक्त परिवार और व्यक्तित्व विकास

संयुक्त परिवार भारतीय समाज की पारंपरिक और महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है, जिसमें कई पीढ़ियाँ—दादा-दादी, माता-पिता, चाचा-चाची और बच्चे—एक साथ रहते हैं। यह संरचना न केवल सामाजिक जीवन को व्यवस्थित नही करती है, बल्कि बच्चों के

International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
Volume 4, Issue 2
Mar-Apr 2026, PP 1-9

व्यक्तित्व विकास में भी गहराई से प्रभाव डालती है। संयुक्त परिवार बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए एक समृद्ध और संतुलित वातावरण प्रदान करता है। यह बच्चों में आत्मविश्वास, सामाजिक कौशल, भावनात्मक संतुलन और नैतिक सोच को विकसित करता है। हालांकि कुछ सीमाएँ भी हैं, लेकिन उचित संतुलन बनाए रखने पर संयुक्त परिवार बच्चों के समग्र विकास के लिए अत्यंत प्रभावी सिद्ध होते हैं। "संयुक्त परिवार बच्चों को सामाजिक, नैतिक और भावनात्मक रूप से परिपक्व व्यक्तित्व प्रदान करते हैं।"

संयुक्त परिवार की अवधारणा- मैक्स मूलर ने परिवार भारत की आदि परम्परा के रूप में संयुक्त परिवार के महत्व को स्वीकार किया है।भारतीय समाज में परिवार की अवधारणा पश्चिमी समाजो से भिन्न रही है। भारतीय परिवार में पति-पत्नी और बच्चे ही नहीं होते, बल्कि उनके चाचा, ताऊ, उनके बच्चे और पौत्र भी होते है। यह प्रथा जिसे संयुक्त परिवार कहा जाता है, भारतीय सामाजिक जीवन की एक प्रमुख विशेषता है। इरावती कर्वे का कथन है कि अत्यधिक प्राचीन काल से ही भारत मे जिस परिवार व्यवस्था को विकसित किया गया, उसे हम संयुक्त परिवार व्यवस्था के नाम से जानते हैं। वास्तव में संयुक्त व्यवस्था वैदिक काल से ही विधमान रही है।संयुक्त परिवार वह परिवार है जिसमें रक्त संबंधी अनेक सदस्य एक ही छत के नीचे रहते हैं, संसाधनों का साझा उपयोग करते हैं और सामूहिक निर्णय लेते हैं। इरावती कर्वे के अनुसार, "संयुक्त परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो सामान्यतः एक ही छत के नीचे रहते हैं, एक चूल्हे पर बना भोजन करते हैं, साझी संपत्ति रखते हैं, साझी पूजा में भाग लेते हैं तथा जो आपस में विशेष नातेदारी से बँधे होते हैं।"

संयुक्त परिवार की मुख्य विशेषताएँ: संयुक्त परिवार की परिभाषाओं के आधार पर परिवार का बड़ा आकर, सामूहिकता (**Collectivism)**, संयुक्त निवास, संयुक्त संपत्ति, संयुक्त रसोई, परस्पर अधिकार एवं कर्तव्य, संसाधनों का साझा उपयोग, बुजुर्गों का मार्गदर्शन, पारंपरिक मूल्यों का पालन आदि सम्मिलित है।

संयुक्त परिवार बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए एक समृद्ध और संतुलित वातावरण प्रदान करता है। यह बच्चों में आत्मविश्वास, सामाजिक कौशल, भावनात्मक संतुलन और नैतिक सोच को विकसित करता है। हालांकि कुछ सीमाएँ भी हैं, लेकिन उचित संतुलन बनाए रखने पर संयुक्त परिवार बच्चों के समग्र विकास के लिए अत्यंत प्रभावी सिद्ध होते हैं। "संयुक्त परिवार बच्चों को सामाजिक, नैतिक और भावनात्मक रूप से परिपक्व व्यक्तित्व प्रदान करते हैं।"

व्यक्तित्व विकास की अवधारणा- व्यक्तित्व विकास से आशय व्यक्ति के व्यवहार, सोच, भावनाओं और सामाजिक संबंधों के समग्र (**Holistic)** विकास से है। यह एक सतत (**continuous)** प्रक्रिया है, जो जन्म से लेकर जीवनभर चलती रहती है। व्यक्ति का व्यक्तित्व केवल उसकी बाहरी छवि (**appearance)** तक सीमित नहीं होता, बल्कि उसके विचार, मूल्य, आदतें, प्रतिक्रियाएँ और सामाजिक व्यवहार भी इसमें शामिल होते हैं।
परिवार, विद्यालय, समाज और सांस्कृतिक वातावरण—ये सभी कारक मिलकर व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

8. **मुख्य आयाम**:
सामाजिक विकास- यह आयाम व्यक्ति की दूसरों के साथ संबंध स्थापित करने और सामाजिक परिस्थितियों में व्यवहार करने की क्षमता को दर्शाता है। सहयोग, सहभागिता

और सहिष्णुता का विकास। सामाजिक नियमों और मानदंडों की समझ। समूह में कार्य करने की क्षमता। सामाजिक विकास व्यक्ति को समाज में समायोजित होने और सकारात्मक संबंध बनाने में सक्षम बनाता है। यह व्यक्ति का भावनात्मक विकास, नैतिक विकास एवं बौद्धिक विकास सुनिश्चित करता है।

सकारात्मक प्रभाव- बच्चों को विविध अनुभव और सामाजिक कौशल प्राप्त होते हैं।, बुजुर्गों से नैतिक शिक्षा और सांस्कृतिक ज्ञान मिलता है। सामूहिकता और सहयोग की भावना विकसित होती है।

आई. पी. देसाई (**I.P. Desai,** 1964) के अध्ययन में पाया गया कि संयुक्त परिवार बच्चों में सामाजिक जिम्मेदारी और सामूहिक सोच को बढ़ावा देता है।

नकारात्मक पक्ष- व्यक्तिगत स्वतंत्रता सीमित हो सकती है। पीढ़ियों के बीच विचारों का संघर्ष। एकल परिवार और बच्चों का विकास आधुनिक शहरी जीवन में एकल परिवार तेजी से बढ़ रहे हैं। इसमें माता-पिता और बच्चे ही मुख्य सदस्य होते हैं। सकारात्मक प्रभाव। माता-पिता का बच्चों पर अधिक ध्यान। आत्मनिर्भरता और स्वतंत्र सोच का विकास।

नकारात्मक प्रभाव- सामाजिक समर्थन की कमी। बच्चों में अकेलेपन की भावना। उरी ब्रोंफेनब्रेनर (**Urie Bronfenbrenner)** के पारिस्थितिकीय मॉडल के अनुसार छोटे परिवारों में बाहरी सामाजिक नेटवर्क की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है।

एकल अभिभावक और महिला मुखिया परिवार- आर्थिक और सामाजिक परिवर्तनों के कारण एकल अभिभावक परिवारों की संख्या बढ़ रही है।

प्रभाव- बच्चे जल्दी जिम्मेदारी सीखते हैं।, माता या पिता के साथ भावनात्मक संबंध मजबूत हो सकते हैं।, लेकिन आर्थिक दबाव और समय की कमी बच्चों के नैतिक विकास पर प्रभाव डाल सकती है। अमर्त्य सेन (**Amartya Sen)** के **"Capability Approach"** के अनुसार संसाधनों की उपलब्धता बच्चों के अवसरों और विकास को प्रभावित करती है।

आधुनिक पारिवारिक संरचनाएँ और नैतिकता

वैश्वीकरण और तकनीकी प्रगति ने नई पारिवारिक संरचनाएँ उत्पन्न की हैं– जैसे **DINK** परिवार, सरोगेसी आधारित परिवार, लाइव-इन संबंध

इन संरचनाओं में बच्चों के लिए पारंपरिक नैतिक ढाँचे बदलते दिखाई देते हैं। सकारात्मक रूप से यह स्वतंत्रता और विविधता को बढ़ावा देते हैं, लेकिन सांस्कृतिक पहचान और मूल्य-संरक्षण की चुनौतियाँ भी सामने आती हैं।

तुलनात्मक विश्लेषण-

[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]

□□□□□□ □□□□□□□□	□□□□□□□□ □□□	□□□□□ □□□□□□□

इस तुलना से स्पष्ट होता है कि कोई भी संरचना पूर्णतः श्रेष्ठ या कमजोर नहीं है; प्रभाव पारिवारिक वातावरण और पालन-पोषण शैली पर निर्भर करता है।

भारतीय संदर्भ में चुनौतियाँ

1. शहरीकरण और प्रवासन से पारिवारिक दूरी।
2. डिजिटल मीडिया का प्रभाव।
3. प्रतिस्पर्धात्मक शिक्षा प्रणाली।
4. नैतिक शिक्षा का औपचारिक शिक्षा में सीमित स्थान।

इन चुनौतियों के कारण परिवार की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है।

9. **शोध निष्कर्ष (**Key Findings)

बच्चों के व्यक्तित्व विकास का मूल आधार पारिवारिक वातावरण है। संयुक्त परिवार नैतिक मूल्यों के संरक्षण में प्रभावी पाए गए, जबकि एकल परिवार आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देते हैं। एकल अभिभावक परिवारों में भावनात्मक समर्थन की आवश्यकता अधिक होती है। आधुनिक पारिवारिक संरचनाएँ मूल्य विविधता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को बढ़ाती हैं।

सुझाव (**Recommendations)**

1. परिवारों में संवाद और भावनात्मक समर्थन को बढ़ावा देना।
2. शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा को पुनः सशक्त करना।
3. डिजिटल मीडिया के संतुलित उपयोग को प्रोत्साहित करना।
4. सामुदायिक कार्यक्रमों द्वारा बच्चों में सामाजिक कौशल विकसित करना।

निष्कर्ष

यह शोध स्पष्ट करता है कि बच्चों के व्यक्तित्व विकास और नैतिक मूल्यों के निर्माण में पारिवारिक संरचना का गहरा प्रभाव होता है। हालांकि कोई भी संरचना पूर्णतः श्रेष्ठ या कमजोर नहीं कही जा सकती, लेकिन भावनात्मक समर्थन, संवाद और मूल्य-आधारित पालन-पोषण सभी परिवारों में आवश्यक है। भविष्य में भारतीय समाज में पारिवारिक संरचनाओं का स्वरूप बदल सकता है, परंतु परिवार की भूमिका बच्चों के नैतिक और सामाजिक विकास में सदैव केंद्रीय रहेगी। पारिवारिक संरचना बच्चों के व्यक्तित्व विकास और नैतिक मूल्यों के निर्माण में केंद्रीय भूमिका निभाती है। संयुक्त परिवार जहाँ सामूहिकता और पारंपरिक मूल्यों को मजबूत करते हैं, वहीं एकल परिवार आत्मनिर्भरता और व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देते हैं। आधुनिक समय में पारिवारिक संरचनाओं में परिवर्तन स्वाभाविक है, लेकिन बच्चों के समग्र विकास के लिए परिवार के भीतर प्रेम, संवाद और नैतिक मार्गदर्शन का होना अनिवार्य है। अतः यह कहा जा सकता है कि किसी भी पारिवारिक संरचना की सफलता उसकी आंतरिक गुणवत्ता, भावनात्मक वातावरण और मूल्य-आधारित पालन-पोषण पर निर्भर करती है। यह अध्ययन दर्शाता है कि परिवार बच्चों के व्यक्तित्व और नैतिक मूल्यों के निर्माण में केंद्रीय भूमिका निभाता है। पारिवारिक संरचना चाहे कोई भी हो, यदि उसमें भावनात्मक सुरक्षा, संवाद और मूल्य-आधारित पालन-पोषण मौजूद है, तो बच्चों का समग्र विकास

International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
Volume 4, Issue 2
Mar-Apr 2026, PP 1-9

संभव है। आधुनिक समाज में पारिवारिक संरचनाओं का परिवर्तन अनिवार्य है, परंतु परिवार का महत्व कम नहीं हुआ है।

सन्दर्भ सूची

1. **Parsons, T. (**1955). **Family, Socialization and Interaction Process.**
2. 2. **Bandura, A. (**1977). **Social Learning Theory.Prentice Hall.**
3. 3. **Bowlby, J. (**1969). **Attachment and Loss.**
4. 4. **Erikson, E. (**1963). **Childhood and Society.**
5. 5. **Desai, I.P. (**1964). **Some Aspects of Family in Mahuva.**
6. 6. **Bronfenbrenner, U. (**1979). **The Ecology of Human Development. Harvard University Press.**
7. 7. **Sen, A. (**1999). **Development as Freedom.**
8. 8. **Sharma, R.N. (**2010). **Indian Social Structure.**
9. 9. **NCERT (**2018). **Indian Sociology**
10. 10. **Piaget, J. (**1965). **The Moral Judgment of the Child. Free Press.**
11. 11. **Kohlberg, L. (**1981). **Essays on Moral Development. Harper & Row.**
12. 12. **Vygotsky, L. (**1978). **Mind in Society. Harvard University Press.**
13. 13. **NCERT (**2020). **National Education Policy. Government of India.**
14. 14. **UNICEF (**2019). **Child Development Report.**